१४

जनभाषा के कवि नागार्जुन

डॉ. संगीता आहेर
महिला महाविद्यालय, गेवराई.

भाषा शैली ही साहित्यकार की पहचान होती है, प्रत्येक रचनाकार अपनी भाषा शैली के आधार पर अलग रूप में पहचाना जाता है | कभी-कभी सरल शब्द-योजना भी प्रभावी, भावपूर्ण और ओजमयी बनती है और कभी-कभी परिष्कृत भाषा शैली भी प्रभावहीन हो जाती है | प्रत्येक रचनाकार का अभिव्यक्ति का अंदाज अलग होता है | जैसे प्रेमचन्द की शैली ही उनकी पहचान बन गई है | रचनाकार की सार्थक अभिव्यक्ति उसकी भाषा को भी शक्ति प्रदान करती है |

नागार्जुन की भाषा में प्रभावात्मकता, समर्थता और हृदयस्पर्शिता यह महत्त्वपूर्ण गुण है | दिल को छू लेनेवाली भाषा में यह कवि अपनी बात कभी सौम्यता से और कभी खुरदरेपन से व्यक्त करता है | जनकवि नागार्जुन सामान्य जनता के दुख और पीड़ा की अभिव्यक्ति बिना किसी शब्दों की बुनावट सजावट से करते हैं | भलेही कहीं कहीं उसमें रूखापन आ जाता है परन्तु उसकी संवेदना की रागात्मकता उस पर मात कर देता है | उन्होंने कला से अधिक यथार्थ को महत्त्व दिया है | अर्थाभिव्यक्ति कवि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है | कथ्य यदि प्रभावात्मक हो तो शिल्प अपने-आप उसके अनुकूल बनता है | कला-वादियों के सजने सँवरने पर कवि तीखा व्यंग्य करते है | जान बूझकर किया हुआ शृंगार कवि को पसंद नहीं है | फिर भी उनका शिल्प जानदार है और भाषा सहज बोधगम्य है |

नागार्जुन की भाषा का अपना अंदाज और मंजा है | कविता के माध्यम से बात करने का कवि का अपना अलग ढंग है | काव्य-भाषाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कवि लिखते हैं, 'अजब संसार है काव्य और कविता का कवि का काव्य भाषा से कवि के अन्तर्मन की, उसके मिजाज की पहचान हो जाती है, इसके साथ शनाख्त इस बात की भी कि कवि संघर्ष से जूझ रहा है या सुविधाओं से घिरे बोरडम से दोनों में बहुत बड़ा फर्क है |'[१]

नागार्जुन की कविता में हिंदी भाषा का विराट रूप देखने को मिलता है | शब्दों को वे जानदार अर्थ प्रदान करते है | नागार्जुन उपयोगितावादी सिध्दांत के कवि हैं, इसलिए उनका भाषा शिल्प भी सामान्य लोगों के उपयोग के लिए ही निर्मित हुआ है | नागार्जुन भाषा के अर्थ विस्तार को समझाते हुए लिखते हैं- 'लेखक के निकट शब्द और अर्थ का रिश्ता बड़ा गहरा है | जिस शब्द का कोई अर्थ नहीं, लेखक उसे क्यों ढोयेगा? अपनी जमीन में क्यों बोयेगा? कभी एक तमाशा और भी होता है | भारी भरकम शब्दों में चना बराबर अर्थ | भाषा में जितनी ही ऊपर की साज सजावट झैयम-झैयम, उतना ही विचार और चिन्तन का दारिद्र्य | भाषा की सादगी फूहडता नहीं, संयम और सँवरना है | जीवन के सेहतमन्द बदलाव मेरे निकट गहरे आकर्षक है |'[2]

नागर्जुन की भाषा असली जन जीवन की भाषा है | उसमें कहीं भी दिखावटीपन नहीं है | परिस्थितिरूप भदेस और गँवार लगनेवालें शब्दों के यथार्थ और सार्थक प्रयोग नागार्जुन ने अपनी कविता में किये है | नागार्जुन के सीधे सरल शब्दों में गहरा प्रभाव डालने की क्षमता है |

नागार्जुन की कविता किसी एक वर्ग के लिए नहीं, सबके लिए है | उनकी हजार-हजार बाहोंवाली कविताएँ हजार-हजार शब्दों को प्राण दे चुका है | उनके शब्दों के सम्बन्ध में अरूण कमल लिखते हैं, 'नागार्जुन को पढ़ने का अर्थ है | हिंदी भाषा के वास्तविक जगत में लौटना, हिंदी के निजी स्वरूप और संस्कारों से परिचित होना | भाषा के इतने रूप बोलियों के इतने मिक्स्चर उनकी कविताओं में मिलते है | कि यदि उनके काव्य के अन्य प्रसंगों को छोड़ भी दें तो सिर्फ अपनी भाषा के लिए वे हमेशा हमेशा के लिए महत्त्वपूर्ण बने रहेंगे |'[३]

नागार्जुन का काव्य लेखन सरल और सहज भावों पर आधारित है | कवि साहित्य को केवल आत्मकेन्द्रित नहीं मानते हैं न ही मात्र मनोरंजन मानते हैं | कवि की दृष्टि से साहित्य में आत्मजगत् और बाह्यजगत् दोनों का समावेश होता है | इसीलिए नागार्जुन शब्द कोश के है | परन्तु इन शब्दों से उनका साहित्यिक महत्व बिल्कुल घटता नहीं बल्कि विषयानुरूप होने के कारणउसका असर अधिक गहरा होता है |

नागार्जुन की व्यंजना शक्ति अत्यंत प्रभावात्मक है | 'दिखने में सीधे लगें, परन्तु घाव करें गंभीर' करने वाली बात उनकी भाषा उनकी भाषा पर पूर्णत: लागू होती है | भाषा की सतर्कता के कारण व्यंजनात्मकता का बखूबी प्रयोग कवि ने किया है | चाहे वह व्यंजना शब्द शक्ति हो या लक्षणा कवि उसका प्रयोग अत्यन्त मार्मिकता से करते है | अर्थ गांभीर्य की दृष्टि से उनकी भाषा अत्यंत सरस बन पड़ी है | द्वंद्व व्यंग्यात्मक धार के साथ अपने अंदाज में प्रकट करते हुए लिखते हैं-

'टूटे सींगवाले साँडो का
यह कैसा चक्कर था
इधर दुधारू गाय खड़ी थी
उधर सरकसी बक्कर थी
समझ न आयेगा बरसों तक
कैसा काला चक्कर था |'[४]

नागार्जुन की भाषा शैली जीवनानुभव की विशाल पूँजी है, जिसमें अभाव, संत्रास, संघर्ष, जिजीविषा आदि का वर्णन हुआ है | परन्तु सौन्दर्य और प्रेम की अभिव्यक्ति भी कवि ने उतनी ही तन्मयता और रागात्मकता के साथ की है |

नागार्जुन की भाषात्मक व्यंजना शक्ति की अन्य कोई मिसाल नहीं है | जीवन की असंगतियों पर आधारित वक्रतापूर्ण शब्द शैली का नागार्जून तीक्ष्णता और सूक्ष्मता के साथ व्यक्त करते है | वास्तव में नागार्जून यथार्थ के चितेरे हैं, भाषा के नहीं | परन्तु जनभाषा में अभिव्यक्त की अनुभूति उनकी कविता में जान डालती है | कवि लिखते हैं -

'इक तरफ-फफकार रहा है लाल किले का भारी झण्डा |
ओ बिहार, क्या देख रहा तू | खाता चल नेहरू का डण्डा
दस हजार, दस लाख मरें पर झण्डा ऊँचा रहे हमारा |
कुछ, हो काँग्रसी शासन का डण्डा ऊँचा रहे हमारा |'[५]

व्यंजनात्मकता के साथ नागार्जुन ने लाक्षणिक शब्द का भी खूब प्रयाग किया है | कवि की लाक्षणिकता का यह सुन्दर उदाहरण है -

'बापू के भी ताऊ निकले तीनों बन्दर बापू के |

सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बन्दर बापू के |'[९]

नागार्जुन की भाषा सामान्य लोगों की बोलचाल की भाषा रही है | व्यवहारोपयोगी और मुहावरों एवं लोकाक्तियों की शैली में नागार्जून ने काव्य रचना की है | प्रगतिशील कविता का ही यह तथ्य है कि कविता के भावों की अनुभूतियों को पाठक सहजता से समझ सकें | नागार्जुन ने भी अपनी कविता में इस सहज संप्रेषणीयता को अपनाते हुए मुहावरों, लोकोक्तियों का यथायोग्य प्रयोग किया है | 'लोहा पीटना','फूले न समाना','तीसों दिन दिवाली', 'दीमक चाट जाना' आदि अनेकों मुहावरों का प्रयोग किया है |

नागार्जुन लोकजीवन से घुले मिले होने के कारण भाषा शैली की दृष्टि से इनकी कविता विविध मुखी है | उसकी कविता में संस्कृत, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषा शैली की दृष्टि से इनकी कविता विविधमुखी है | उसकी कविता में संस्कृत, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषा के शब्दों के साथ मैथिली के शब्द प्रयोग भी देखने को मिलते है, सीधी सरल और सामान्य लोगों की बोलचाल की भाषा ही कवि को अधिक प्रिय है |

नागार्जुन की एक हिंदी कविता में बंगला का प्रयोग किया गया है | इसलिए उनकी भाषा का कोई विशिष्ट रंग-ढंग नही है | उसमें साधारण लोगों की भाषा, पंडितों की भाषा, काव्य रसिकों की भाषा आदि विविध रंग है | इसी कारण उसमें संस्कृत, बंगला, अंग्रजी का सफल प्रयोग हुआ है |

बचपन से ही नागार्जुन पर संस्कृत भाषा का प्रभाव था | संस्कृत में ही उन्होंने गाँव की पाठशाला में ज्ञानार्जन शुरू किया था | संस्कृत काव्य भाषा का प्रभाव और संस्कार कवि की कविता में मिलता है | संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग यत्र-तत्र उनकी कविता में व्याप्त है | इतना ही नहीं संस्कृत के मन्त्रों की तरह कविता भी नागार्जुन लिखते हैं-

'ओं शब्द ही ब्रह्म है

ओं शब्द और शब्द और शब्द और शब्द

ओं प्रणव, ओं नाद ओं मुद्राएँ

ओं भाषण.....

ओं प्रवचन.....

ओं हुकार, ओं फटकार, ओं शीत्कार

ओं आस्फालन, ओं इंगित, ओं इशारे

ओं नारे और नारे और नारे और नारे |'[१०]

नागार्जुन की कविता में संस्कृत भाषा के शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है | इसी कारण संस्कृत के शब्दों का उनकी कविताओं में बार-बार प्रयोग हुआ है |

अंग्रेजी शब्दों का भी नागार्जुन ने यथायोग्य स्थान पर प्रयोग किया है | प्लीज एक्सक्यूज मी इस अंग्रेजी शीर्षक से ही कवि लिखते हैं |

'सहसा बोल पड़ी ओ स्सारी |

लिया नहीं इसको?

प्लीज एक्सक्यूज मी, बक बक करती रही |'[९]

नागार्जुन ने उर्दू शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में किया है | जैसे बेरूखी, निगाह, अनामत, फिक्र, सुलह, दुरूस्त, शौक, अलहदा, अलविदा, नदारद, दरवेश, होश, हवास, खैर आदि नागार्जुन उर्दू के शब्द प्रयोग अपनी काव्य भाषा को व्यावहारिक बनाते हैं|

उर्दू शब्द का काव्य प्रयोग करते हुए कवि लिखते हैं-

'जो प्लेटफारम पर जमा दम यात्रियों की भीड़ मे

यह लीफलेट गिरा गया है |'[१०]

नागार्जुन जनता के कवि है | इसीलिए वे जनता की भाषा में ही अभिव्यक्ति पसन्द करते हैं | किसी वाक्यों या शब्दों के समूह को कवि भाषा नहीं कहते बल्कि उनकी नजर में भाषा जीवन का समूह है | सामाजिक जीवन से जुड़े हुए होने के कारण कवि की भाषा अनुभव और अपने परिवेश की देन है | भाषा ही कवि के स्वभाव और परिवेश की पहचान होती है, जो नागर्जुन की कविता में हमें देखने को मिलती है | इसी सामाजिक निष्ठा के कारण कवि को कबीर की भाषा अपनी सी लगती है | कवि स्वयं लिखते हैं - 'कबीर को पढ़ते समय यह लगा था, वही मेरी भाषा का कवि है |'[११] कबीर की तरह नागार्जुन की भाषा में भी खिचड़ी भाषा के प्रयोग मिलते हैं | नागार्जुन की बहुरंगी भाषा उनके बहु आयामी व्यक्तित्व की परिचायक है |

नागार्जुन का काव्य सृजन ही जनहित के लिए है | ऐसे समय में उन्होंने शिल्प कला का विचार नहीं किया | बल्कि लोकजीवन के अनुकूल काव्य रचनाएँ की | भाषा का वैविध्य और शैली की सजीवता उनकी कविता में जान डालती है |

संदर्भ

१) साहित्यशास्त्र, डॉ. माधव सोनटक्के, पृष्ठ १५५

२) मेरे साक्षात्कार, नागार्जुन, पृष्ठ ८६

३) कविता और समय, अरूण कमल, पृष्ठ ३१

४) खिचड़ी विप्लव देखा हमने, नागर्जुन, पृष्ठ ११०

५) नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ २ झण्डा, शोभाकांत मिश्र, पृष्ठ ११०

६) तुमने कहा था तीनों बंदर बापू के, नागार्जुन, पृष्ठ ११०

७) नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ २ द्याकचो खोकोन ओइ, शोभाकांत मिश्र, पृष्ठ १३०

८) नागार्जुन (मंत्र), प्रभाकर माचवे, पृष्ठ ११६

९) नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ २ प्लीज एक्सक्युज़मी, शोभाकांत मिश्र, पृष्ठ ११४

१०) इस गुब्बारे की छाया में वह कौन था, नागार्जुन, पृष्ठ ९०

११) नागार्जुन एक लम्बी जिरह, विष्णुचंद्र शर्मा, पृष्ठ १०३